International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Vol. 1 No.1
Sept – Oct 2013

हिंदी	# हिंदी के प्रचार–प्रसार मुद्रित माध्यमों की भूमिका दैनिक समाचार पत्र के संदर्भ में

डॉ. आर. पी. भोसले,
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कला, वाणिज्य महाविद्यालय,
पुसेगाव जिला–सातारा (महाराष्ट्र)

प्रस्तावनाः

जनसेवा का सशक्त माध्यम समाचार पत्र है। यह आधुनिक युग में मुद्रित माध्यमों में सबसे जीवंत तथा प्रभावशाली माध्यम है। अपने प्रारंभिक काल से समाचार पत्र परिष्कृत जन रूचि का अभिप्रमाणन करती हुई शासनतंत्र की कुरीतिओं के विरूद्ध एक अस्त्र के रूप में ही है। वर्तमान स्थितिओं में समाचार पत्र जीवन का अपरिहार्य अंग बन गया है। संचार माध्यम के वैविध्य के बावजूद समाचार पत्रों की विश्वसनीयता की अपनी वजह है और उसमें स्थान पाने की अपनी ललक। समाचार की शक्ति से समाज की कमियों, गलतियों और कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। इन विचारों को समाज तक पहुँचा ने का साधन समाचार पत्र है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली घटनाओं की जानकारी समाज को देता है। वह समाज को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक गतिविधियों का परिचय देकर जन जागृति करता है। सूचना प्रौद्योगिक के क्षेत्र में मुद्रित माध्यम का वर्चस्व रहा है।

समाचार पत्र विज्ञान की देन है। इसे अंग्रेजी में 'जर्नालिझम' पर्यायी शब्द है। इसे हिंदी में 'अखबार', 'समाचार पत्र', 'पत्रकारिता' तथा मराठी में वर्तमान पत्र' आदि शब्द प्रचलित हैं। आज समाचार पत्र समाज की दिग्दर्शिका और नियामिका बनी है । समाचार पत्र अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भारत में समाचार पत्र पहले मिशन के रूप में थे। आज उसमें व्यवसायिकता आई है। आज शब्द, ध्वनि और चित्रों के माध्यम से ज्ञान और विचार समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ पत्रकारिता से जनकल्याण हेतु समाज तक पहुँच रहे है। म.गांधी जी ने समाचार पत्र को सेवाव्रत माना था। "The objective of

journalism is service"[1] सेवा का अर्थ नौकरी न होकर मानव सेवा हैं। राष्ट्रीय चेतना के लिए भारतीय पत्रकारिता का विकास हुआ है।

परिभाषाः

1. न्यू. वेबस्टर्स डिक्शनरी – "प्रकाशन, संपादन, लेखन एवं प्रसारण युक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय पत्रकारिता है।"[2]
2. श्री. प्रेमनाथ चतुर्वेदी– "पत्रकारिता विशिष्ट देश, काल, परिस्थिति गत तथ्यों को मूर्त परीक्षा मूल्यों के संदर्भ और आलोक में उपस्थित करती है।"[3]

मुद्रण के अविष्कार ने समाचार के क्षेत्र में मानवीय सभ्यता के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अशोक के शिलालेख से भारत में संप्रेषण की विशिष्टता रही है। मध्यकाल में भक्त एवं संतों ने सांस्कृतिक पुनर्जागरन का कार्य किया है। मुगलकाल में प्रशासनिक कार्यों के लिए संचार माध्यमों का उपयोग हुआ है। ईस्ट इंडीया कंपनी के आगमन के उपरांत मुद्रित माध्यम की अवधारना हुई है। इ.स. 1926 में कलकत्ता से हिंदी समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' से नए युग की अवधारना हुई है। हस्तलिखित से आगे चलकर मुद्रण कला का विकास हुआ है। एक निश्चित टाईप के वर्ण बनाकर वर्णा में शब्द और वाक्य बनाकर पृष्ठ पर उसे मुद्रित किया जाने लगा। उसे ही मुद्रित समाचार पत्र के रूप में पहचाना जा रहा है। मुद्रित समाचार पत्र का संबंध मुद्रण कला से, उसी तरह जिस तरह एक चित्र का संबंध चित्रकला से रहता है। मद्रित समाचार पत्र के लिए लिपि का होना बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। लिपि से ही मुद्रित समाचार पत्र का जन्म माना जाता है। मुद्रण के अविष्कार से किसी भी लेख की बहुत सी प्रतिमा निकालना संभव होती है। प्रसार माध्यम के रूप समाचार पत्र को इसका काफी लाभ हुआ है। मुद्रण के अविष्कार से ज्ञान संप्रेषण के क्षेत्र में क्रांति उपस्थित की है।

मुद्रण का प्रारंभ चीन में हुआ है। चीन की सहस्त्र बुद्ध गुफाओं में 'हीरकसूत्र' नामक किताब को ही संसार की प्रथम मुद्रित किताब माना जाता है। विद्वानों का मानना है कि औद्योगिक क्रांति ने मुद्रण कला पर भी अपना अमीट प्रभाव छोडा है। भारत में मुद्रण कला का प्रारंभ 6 सितंबर 1556 ई.को. सैंटजैवियर ने 'दौकत्रीनाक्रिस्ताओ' नाम का किताब छपवाया है। बंगाल में व्यापक रूप से मुद्रण कला का विकास हुआ है। 1816 ई. में

अमरिकी के ईसाई मिशनरियों द्वारा मुंबई में व्यापाक विस्तार हुआ है। मुद्रण विभाग मूल रूप से यंत्र प्रधान होता है। प्रिंट समाचार पत्र में मुद्रण कला का स्थान महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति द्वारा और स्वयंचलित यंत्रों द्वारा मुद्रण का कार्य किया जा रहा है। विज्ञान की सहायता से काफी विकास हुआ है । विकसित मशिनों द्वारा समाचार पत्र शीघ्रता से बडी संख्या में मुद्रित हो रही है। संगणक की सहाय्यता से फोटो कंपाजिंग तथा लेजर टाइप सेटिंग द्वारा एक फिल्म पर ही कंपोज किया जाता है। फिल्म से पूरा पृष्ठ तैयार करके ऑफसेट मुद्रण किया जाता है। समाचार पत्र के मुद्रण में उपग्रह सैटेलाईट के प्रयोग ने क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। समाचार पत्र का जन्म ही मुद्रण कला से गहरा संबंध रहा है। अमेरिका के प्रसिद्ध साहित्यकार मार्कट्वेन कहता है कि "समाचार पत्र का पहला कर्तव्य है कि वह सुंदर लिखे दूसरा यह कि सच बोले।"[4] अर्थात सत्य एवं यथार्थ को आकर्षक रूप में स्थापित करने का कार्य मुद्रण कला द्वारा होता है।

निष्कर्षः

भारत में मुद्रण कला का स्थान महत्त्वपूर्ण है। मुद्रण कला ईसाई मिशनरियों द्वारा, धर्म प्रसार तथा अंग्रेजों द्वारा राजनीतिक कारणों के लिए ही स्थापित हुई। मुद्रण प्रतिकों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति है। आकर्षक मुद्रण विचारों की अभिव्यक्ति के साथ–साथ पाठकों को प्रभावित करती है। यदि समाचार पत्र को दुल्हन माना जाए, तो मुद्रण उसके परिधान माने जाएंगे। उज्ज्वल विचारों को कलात्मकता से प्रस्तुत करने का काम मुद्रण कला ही करती है।

संदर्भ सूचीः

1. डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, डॉ.प्रमिला अवस्थी, 'प्रयोजन मूल्य हिंदी' आशीष प्रकाशन, द्वि.सं. 2006, कानपुर, पृ.113
2. डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, डॉ.प्रमिला अवस्थी, 'प्रयोजन मूल्य हिंदी' आशीष प्रकाशन, द्वि.सं. 2006, कानपुर, पृ.115
3. डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, डॉ.प्रमिला अवस्थी, 'प्रयोजन मूल्य हिंदी' आशीष प्रकाशन, द्वि.सं. 2006, कानपुर, पृ.116
4. डॉ. सुजाता वर्मा, 'पत्रकारिता' प्रशिक्षण एंव प्रेस विधि', आशीष प्रकाशन, द्वि.सं. 2006, कानपुर, पृ.173